

6

एक अद्भुत आतमा

एक अद्भुत आतमा, वीरनो मारग जाणता;
 मुमुक्षुओ वखाणतां, ए प्रभावशाळी आतमा ॥१॥
 समयसार ने क्षणनारो, सर्व दोषने हणनारो;
 मुक्ति ने ते वरनारो, ए प्रभावशाळी आतमा ॥२॥
 आध्यात्मिक ए योगी छे, आतमरसनो भोगी छे;
 शुद्धस्वरुप संयोगी छे, ए प्रभावशाळी आतमा ॥३॥
 पूर्वभवमां पामेलो, ते पण साथे लावेलो;
 तत्वज्ञानमां रसघेलो, ए प्रभावशाळी आतमा ॥४॥
 कुंद-सीमंधर वारस छे, रत्न चिंतामणी पारस छे;
 अंतर जेनुं आरस छे, ए प्रभावशाळी आतमा ॥५॥
 आत्म मस्तीमां मस्त रहे, सघळां नुं ए हित चहे;
 कर्मशत्रु ने नित्य दहे, ए प्रभावशाळी आतमा ॥६॥
 महाप्रतापी पुरुष छे, भेदज्ञान नो स्फुरक छे;
 जाणे उगतो सूरज छे, ए प्रभावशाळी आतमा ॥७॥
 नही ओळखे ते पस्ताशे, भव रखडी खत्तां खाशे;
 जाणनारा फावी जाशे, ए प्रभावशाळी आतमा ॥८॥

तेने कदी ना विसारीए, आज्ञा एनी शिर धरीए;
भव-सागर सहेजे तरीए, ए प्रभावशाळी आतमा ॥९॥

गुरुदेव ने पाये लागु छुं, अविनय नी माफी मांगु छुं;
सेवा-भक्ति याचुं छुं, ए प्रभावशाळी आतमा ॥१०॥

ए भारतनी विभूति छे, सिद्धपदनी समजूती छे;
केवळ करुणामूर्ति छे, ए प्रभावशाळी आतमा ॥११॥

करुणा अपरंपार छे, पुण्यशाळी पारावार छे;
तेने वंदन लाखोवार छे, ए प्रभावशाळी आतमा ॥१२॥

